साहित्य / काव्य

स्वरूप एवं परिभाषा

काव्य का स्वरूप बड़ा व्यापक है उसी प्रकार सूक्ष्म भी है। काव्य मानव जीवन की असफलता और निराशा की दशा में आशा का संचार करता है। मरणशील व्यक्ति को भी अमर बनाने का समर्थ प्रयास करता है। मनुष्य के सुप्त विचारों को साकार करने का प्रयास करता है। अतः काव्य बाहय जगत के साथ साथ हमारे मानस जगत के अंतरमन का भी चित्रण करता है इसलिए हम कह सकते है की काव्य का विषय 'मनुष्य जीवन' है। वास्तविक जीवन और जगत की भूमीपर काव्य की कल्पना जगत का विकास होता है इसलिए काव्य जीवन से निकटतम संबंध रखता है।
आदिकाल से लेकर आज तक काव्य का स्वरूप स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। लेकिन काव्य के व्यापक स्वरूप को परिभाषा में नहीं बाँध सके इसलिए कोई भी परिभाषा परिपूर्ण नहीं दिखाई देती।
संस्कृत के कुछ विद्वानोने काव्य को परिभाषा में बांधने का प्रयास किया है। कुछ महत्वपूर्ण विद्वानों की परिभाषाओं का हम विचार करेंगे--
भामह : अपने 'काव्यालंकार' ग्रंथ में काव्य को परिभाषा में बांधने का प्रयास भामह इस प्रकार करते है।--

"शब्दार्थो सहितौ काव्यम् ।”

अर्थात "शब्द और अर्थ का सही मेल ही 'काव्य' है।"

यह परिभाषा अत्यंत व्यापक है, क्योंकि इसके क्षेत्र में काव्य के अशास्त्र इतिहास वार्तालाप आदि सभी आ जाते हैं। अतः इसमें अतिव्याप्ति दोष है। यह लक्षण काव्य के अत्यंत व्यापक और बाहय स्वरूप का ही स्पष्टीकरण करता है।

आ. मम्मट :

अग्निपुराण का आधार ग्रहण करते हुए अपने ग्रंथ 'काव्य प्रकाश' में काव्य का लक्षण देते है --

"तदोषौ शब्दार्थी सगुणावलंकृती पुनः क्वापि।"

अर्थात "दोषहीन, गुणयुक्त और कभी-कभी अलंकार से रहित शब्दार्थ काव्य है," ऐसा कहा गया है।
इस परिभाषा पर आक्षेप लिया जाता है की काव्य कभी अलंकार से रहित नहीं होता।

आ. विश्वनाथ :

रसवादी आचार्य विश्वनाथ ने काव्य में रस को विशेष महत्व देते हुए अपने ग्रंथ 'साहित्यदर्पण' में काव्य का लक्षण इस प्रकार दिया है

"वाक्यं रसात्मकं काव्यम्"

अर्थात "रसयुक्त वाक्य काव्य है।"

इस लक्षण में एक अर्थ तो यह हो सकता है कि विभावानुभाव व्यभिचारी भावों के संयोग से निर्मित रस से युक्त वाक्य काव्य है। ऐसी दशा में रस की काव्य में अनिवार्यता सिद्ध होती है।

पण्डितराज जगन्नाथ :

'रसगंगाधर' में इन्होंने काव्य लक्षण इस प्रकार दिया है

"रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्" अर्थात "रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करनेवाला शब्द 'काव्य' है।"

इस लक्षण में कुछ लोग आपत्ति उठाते हैं कि काव्य के अंतर्गत शब्द में सदैव अर्थ की रमणीयता नहीं होती, पूरे वाक्य से रमणीयता प्रतिपादित होती है। अतः रमणीय अर्थ देनेवाला वाक्य, काव्य होना चाहिए।

संस्कृत विद्वानों की तरह हिन्दी साहित्यकारों ने भी काव्य की परिभाषा दी है--

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी :

"कविता वह प्रभावशाली रचना है जो पाठक या श्रोता के मनपर आनंददायी प्रभाव डालती है। "

आ. रामचंद्र शुक्ल :

शुक्लजी ने दो काव्य लक्षण दिए हैं

1] "कविता जीवन और जगत् की अभिव्यक्ति हैं।"
2] "सत्वोद्रेक या हृदय की मुक्तावस्था के लिए किया हुआ शब्द विधान काव्य है।"

जयशंकर प्रसाद :

छायावादी कवियों में सबसे महत्वपूर्ण धारणा प्रसाद जी की है।

"काव्य आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति है जिसका संबंध विश्लेषण, विकल्प या विज्ञान से नहीं है। वह एक श्रेयमयी प्रेम रचनात्मक ज्ञानधारा है।"

सुमित्रानंदन पंत :

"कविता हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है।" इस परिभाषा पर आक्षेप लिए जाते है कि इसमें परिपूर्ण क्षण कौनसे है? सभी लोगों कि वाणी को कविता कहा जाएगा क्या?ईसा होता तो सभी लोग कवि बन जाते।

महादेवी वर्मा :

"कविता कवि विशेष की भावनाओं का चित्रण है और वह चित्रण इतना ठीक है कि उससे वैसी ही भावनाएँ किसी दूसरे के हृदय में अविर्भूत होती हैं।"
यह लक्षण काव्य के पूरे क्षेत्र पर लागू नहीं हो सकता। यह केवल गीतिकाव्य की विशेषता हो सकती है। अतः यह परिभाषा सीमित है।

पाश्चात्य आचार्यों ने काव्य के लिए कल्पना, बुद्धि, भाव और शैली तत्व की आवश्यकता स्वीकार करके काव्य या साहित्य के लक्षण निर्धारित किये हैं। प्रमुख पाश्चात्य काव्यलक्षण निम्ना नुसार हैं --

एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका (Encyclopaedia Britannica)

"Poetry is the artwork of the poet."

अर्थात, "कवि का कार्य, कला, काव्य है।"

यह लक्षण अस्पष्ट है। पहले कवि को समझा जाय, तब उसके कार्य को काव्य कहा जाय। कवि के माध्यम से कविता की परिभाषा उचित और स्पष्ट नहीं।

ड्राइडन (Dryden)

"Poetry is articulate music."

अर्थात, "कविता सुस्पष्ट संगीत है।"
यह परिभाषा सर्वत्र सत्य नहीं अनेक गीत जो गाए जाते है वे सभी काव्य की विशेषता नहीं रखते अतः यह परिभाषा उपयुक्त नहीं।

कॉलरिज (Coloridge)

"Poetry is the best words in their best order."

अर्थात, "सर्वोत्तम शब्द अपने सर्वोत्तम क्रम में कविता होती है।"

यहाँ प्रश्न यज है की सर्वोत्तम शब्द कौनसे हैं और उनका सर्वोत्तम क्रम कौनसा है? स्वर्ग, सोना, पुष्प, सौंदर्य, अमृत आदि शब्द उत्तम होने चाहिए। ऐसी दशा में मृत्यु, कीचड, नरक आदि शब्द बुरे होंगे और काव्य के क्षेत्र से उन्हें निकल जाना पड़ेगा। पर, इन शब्दों और इनके पर्यायों का उत्तम काव्य में खूब व्यवहार होता है। अतः यह परिभाषा उपयुक्त नहीं है।

वर्डसवर्थ (Wordsworth)

"Poetry is the spontaneous overflow of powerful feelings, it takes its origin from emotions recollected in tranquillity"
अर्थात, "कविता प्रबल अनुभूतियों का सहज उद्रेक है, जिसका स्त्रोत शांति के समय में स्मृत मनोबेगों से फूटता है।"

वर्डसवर्थ की परिभाषा तथ्यपूर्ण है, क्योंकि यह भावानुभूति और अभिव्यक्ति की प्रक्रिया को स्पष्ट करती है। इस लक्षण में भी आपत्ति उठाई जा सकती है। शांति के समय में सभी अपने मनोवेगों का स्मरण करते हैं और अपने प्रबल भावों को प्रकट भी करते हैं, क्या वह सब काव्य हो जाता है? यहाँ पर अभिव्यक्ति कला और उसके प्रभाव का उल्लेख नहीं है।

मैथ्यू आर्नल्ड :

"Poerty is at bottom, a criticism of life”

अर्थात “कविता अपने मूल रूप में जीवन की आलोचना है।"

इस परिभाषा में उत्तम काव्य की विशेषता स्पष्ट हुई है। परंतु यह कोई विशिष्ट लक्षण नहीं माना जा सकता। जीवन की समीक्षा साहित्य के और रूपों में भी हो सकती है। केवल कविता में ही नहीं। अतः यह आर्नाल्ड की निजी काव्यादर्श का संकेत करनेवाली उक्ति है। कविता की परिभाषा नहीं।

शैली :

" poetry is the record of the best and happiest moments of the happiest and best minds"

अर्थात "सर्वसुखी और सर्वोत्तम मनो मनों के सर्वोत्तम और सर्वाधिक सुखपूर्ण क्षणों का लेखा कविता है। "

यहाँ पर शंका यह उठती है कि सबसे सुखी क्षण कौनसे है ? उनका लेखा सदैव कविता होगी , यह संदिग्ध है | अतः उपर्युक्त परिभाषा भावुकतापूर्ण ही है ।